1/12/1967 शुक्रवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– यही बहार है दुनियाँ को भूल जाने की, खुशी मनाने की।
यही घड़ी है गाने की, गुनगुनाने की, हाँ मुस्कुराने की.....

ओमशांति! मीठे–2 बच्चों ने ये गीत सुना। अभी बच्चे जानते हैं, गीत तो ये दुनियावी मनुष्यों ने बनवाया है, बनाया है, गाया है और अक्षर बड़े अच्छे हैं– ये पुरानी दुनियाँ को भुलाना है। बच्चे अभी समझ में, ऐसे नहीं समझ में बच्चों को आगे आते थे या कलहयुगी मनुष्य को नहीं समझ में आते हैं। तो ज़रूर पुरानी दुनियाँ कोई–2 इस समय में भुलाना होगा; क्योंकि नई नई दुनियाँ में भी तो जाना होगा। तो समझते हैं कि ये पुरानी दुनियाँ को छोड़ना है, नई दुनियाँ को याद करना है; परन्तु वो समझते हैं अभी बहुत समय पड़ा हुआ है। ये तो समझते हैं ज़रूर कि नई और पुरानी, पुरानी और नई तो ज़रूर होएगी। ये तो कौन एक मूर्ख भी नहीं होगा; परन्तु क्योंकि लम्बा टाइम डाल दिया है तो छोड़ दिया है, भूल गए हैं। सिमरण करने को भी भूल गए हैं। तुम बच्चों को स्मृति दिलाई जाती है कि अभी नई दुनियाँ स्थापना हो रही है, पुरानी दुनियाँ भुलाना ही है। तो भूलने की बात है ना बच्चे! अभी भुलावें कैसे? कौन कहते हैं– भूल जाओ? भूल जाने से क्या होगा? भूल जाने से यह ज़रूर कि हम यहाँ से इस शरीर को छोड़ करके नई दुनियाँ में जाएँगे। ये तो है तो सहज ना; परन्तु होता क्या है कि अज्ञानकाल में...बुद्धि पत्थर–बुद्धि हो जाती है। ऐसी–2 समझ की बातें जो गाते हैं, करते हैं, उनके ऊपर अर्थ का ध्यान नहीं जाता है कुछ भी। इस प्रकार का जिस प्रकार से बाप समझाते हैं विचार–सागर–मंथन करने, उस प्रकार से उन लोगों को कोई भी समझाने वाला नहीं है इसलिए और ये गीत तो गाया हुआ है; परन्तु तुम समझ सकते हो इस गीत को। जो बच्चा माँगे और फौरन दे दिओ, तो उनकी दिल राज़ी हो जाए। ये गरीब निवाज़ है, राज़ी करते हैं हर बात में, क्या चाहिए उनको। ... बहुत रखनी चाहिए यहाँ। बाप की याद में भी रहना चाहिए; क्योंकि वो तो जानते हो बच्चे कि ये बाप है बहुत साधारण। कभी भी कोई नहीं, यहाँ के बच्चे भी नहीं समझते हैं। समझा ना! यहाँ के अनन्य, जिसको तुम लोग समझो कि ये तो फर्स्टक्लास है बाबा का बच्चा; परन्तु उनको ये भूल जाते हैं कि इनमें कोई शिवबाबा आते हैं, कोई भी वक्त में आ सकते हैं, कोई वक्त में कोई भी डायरेक्शन दे सकते हैं। तो भले आ करके डायरैक्शन्स भी देंगे, तो ये लोग नहीं मानेंगे। समझा ना! क्योंकि इन लोगों को ये नहीं मालूम होते हैं कि शिवबाबा बोलते हैं। ये इनकी बुद्धि में कभी बहुत मुश्किल बच्ची, बहुत मुश्किल। ये फिर भी ये समझ लेते हैं कि ये बाबा बोलते हैं। वो, वो भूले हुए हैं ना! ये जो कहते हैं– बाबा, हम भूल जाता हूँ, वो सारा दिन भूले हुए हैं। बाबा बताएँ अनन्य–2 जिसको बाबा कहते हैं, वो भी जब यहाँ रहते हैं, तो जिस समय में कोई भी डायरैक्शन्स वगैरह देते हैं, वो ये नहीं समझते हैं बच्चे कि कोई शिवबाबा का डायरैक्शन्स हैं, बिल्कुल नहीं। देखो, बाबा डायरैक्ट कहते रहते हैं ना! तो वो–2 ये न समझने के कारण फिर बहुत ही वारी कुछ भी नहीं, मानते भी नहीं हैं कोई, कुछ कार्य करते भी नहीं हैं यानी उड़ाय देते हैं; क्योंकि है तो थोड़ी, माया की भी तो है ना! माया याद करने देती नहीं। ये स्थायी रह नहीं सकते हैं। स्थायी में मेहनत करते–3 भई पिछाड़ी में। ऐसे कभी भी कोई भी मनुष्य नहीं होगा जो इस समय में कर्मातीत अवस्था को पहुँचें। ये बाबा अपने लिए भी कहते हैं ना– 'ये'; क्योंकि ये तो दो बाबा हैं, अपने लिए थोड़े ही कहेंगे। नहीं! इस बाबा को जैसे है वैसे ये समझनी भी तो चाहिए ना देखो! अभी तुम्हारे से बाबा प्रश्न पूछेगा कि बापदादा ये गरम कपड़ा पहनते हैं? बाबा गरम कपड़ा पहनते हैं? दादा गरम कपड़ा पहनते हैं? तो कहोगे– हाँ, दोनों को ही तो पड़े हुए हैं ना! फिर शिवबाबा से पूछेंगे, बोलोगे– नहीं। मैं गरम कपड़ा नहीं पहनता हूँ, मुझे थोड़े ही ठण्ड लगती है। मुझे ठण्ड नहीं लगती है। बाकी हाँ, ये

जिसमें प्रवेश किया, उनको ठण्ड लगेगी। मैं इन सब बातों से न्यारा हूँ बिल्कुल। भूख, उन्य, वो कहते हैं ना– समान रहना चाहिए। बाप कहते हैं– मुझे भूख, उन्य ये वगैरह–2 कुछ नहीं। जैसे वो साधु था ना, वो बोलता था– मैं न खाता हूँ, न हगता हूँ, न पीता हूँ। तो बाबा भी ऐसे कहते हैं कि मैं तो निर्लेप हूँ। ये सर्विस करते हुए भी मैं इन सब बातों से ये जैसे कि निर्लेप हूँ। ये खाना–पीना वगैरह, ये मैं नहीं करता हूँ। तो देखो, ये बाप कहते हैं ना कि मैं नहीं खाता हूँ, पीता हूँ, ये करता हूँ, ये करता हूँ। तो उन्होंने भी सुन लिया है, सुन लिया है तो उन्होंने वो वेश धारण कर रखा है आर्टिफिशियल। आर्टिफिशियल तो बहुत हैं ना बच्चे! ये नाम बहुत ही– ल.ना., सीता–राम, ये भक्तवत्सलम्, फलनम्–टीरम् अनेक नाम हैं; परन्तु हैं थोड़े ही वो ही। ना, वो सब झूठे नाम रखे हुए हैं बहुत; क्योंकि यहाँ नाम हैं देवताओं का बहुत और देवियों का बहुत। और कोई धर्म में इतना नाम देवी–देवताओं का होता ही नहीं है। वो देवी–देवता तो बनते ही नहीं हैं। यहाँ देखो कितने मन्दिर हैं, कितने नाम हैं सबका। अच्छा, बाहर में कहाँ भी जाएँगे तो एक शिवबाबा भी तो एक मानेंगे ना! देखो, ऐसे ही कहते रहते हैं– भई एक और बुद्धि भी कहते हैं कि फादर तो एक ही होते हैं। वो फादर ही, फादर से ही इन्हेरिटेन्स मिलते हैं। अभी तुम बच्चों को तो अच्छी यादगिरी है कि बाबा से इन्हेरिटेन्स मिलते हैं संगमयुग पर, जबकि हम सुखधाम में हैं और बाकी सब शान्तिधाम में हैं। पीछे दुख हो सकते हैं इस दुनियाँ में? नहीं! ये सहज है ना ये समझने का! पर तुम्हारे में भी नम्बरवार ये समझ है, जो बहुत करके ये रहती है और बाकी तो है, उनको बिचारों को इतना मालूम भी नहीं है। है ना! क्योंकि सारा दिन झरमुई–3 वो उन बातों में रहते हैं। ज्ञान के विचारों में रहें, जिसको ज्ञान–मंथन कहा जाता है, तो वो तो बस उनके बोल निकले ही, बाबा जैसे कहते हैं ना– हरेक आत्मा वास्तव में, अभी देखो तुम रूप–बसन्त बन रहे हो ना! बाबा के द्वारा रूप–बसन्त, रूप भी हो और ज्ञान भी है तुम्हारे में। अच्छा, पीछे तो ये ज्ञान गुम हो जाते हैं ना! पीछे तुमको कोई, अभी रूप–बसन्त कहते हैं। बाप समझाते हैं, दूसरा तो कोई तुमको रूप–बसन्त तो नहीं कहेगा ना! दुनियाँ में एक भी मनुष्य नहीं होगा, जो तुम हर एक को कहेंगे, तुम हर एक आत्मा अभी बन रही हो ना! पिछाड़ी में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बन जाएँगी, पढ़ाई पढ़ जाएँगी, कोई थोड़ी, कोई बहुत, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर भी तो रूप–बसन्त तो हो ना! कुछ–न–कुछ ज्ञान का ज़रा तो होगा ना ज़रूर! समझे ना! अच्छा, बाबा है, वो भी तो ज्ञान है ना बच्चे– शिव हमारा बाबा है। दिल से लगता है कि हमारा बाबा है। यूँ थोड़े ही भक्तिमार्ग में लगता है दिल से कि लगता है हमारा बाबा है? ना, वो तो ऐसे ही कह देते हैं। तो यहाँ तो सम्मुख हैं। फिर ये बच्चे अभी समझते हैं कि बाबा फिर यही समय में आएँगे, और कभी भी आएँगे नहीं। इसलिए हम भी समझते हैं– कभी भी नहीं आएँगे; क्योंकि पीछे आने की दरकार ही नहीं है। पीछे सतयुग से ले करके त्रेता तक तो आने का नहीं है, त्रेता से ले करके फिर द्वापर–कलहयुग तक आने का नहीं है। आता ही है संगमयुग पर और फिर है भी गरीब निवाज़। अभी गरीब निवाज़, तो बहुत साहुकार हुआ ना बच्ची! इनके लिए ही कहा जाता है– गरीब निवाज़। यानी सारी दुनियाँ जो गरीब हो जाती है या दुःखी हो जाती है, ये उनका बाप। तो इनकी दिल में क्या होता होगा? हम गरीब निवाज़ हैं ना! हम तो बहुत दान–पुण्य करें; पर दान–पुण्य किसको करें, क्या चीज़ का करें? है ना दान–पुण्य, तो गरीबी एकदम मिट जाए सबकी, वो तो सिवाय इस ज्ञान के और तो कोई चीज़ है नहीं। कपड़े से तो कोई साहुकार नहीं बन सकेंगे। कपड़े से गरीब हैं। बाबा गरीब निवाज है, गरीब को देखेंगे, कपड़ा फटा हुआ है, दिल होगी तो इनको कपड़ा दे देवे। गरीब होगा, फटा कपड़ा है, दिल होगी– इनको कपड़ा दे दूँ। तुमको तो याद पड़ता है ना– मैं गरीब निवाज़ हूँ, गरीब निवाज़ हूँ। वो तो बुद्धि में है ना! तो

ये गरीब हैं, साथ–2 में वो भी रहते हैं– हम गरीब कोई इन आदमियों का नहीं हूँ, हम गरीब हूँ जो पतित बन गए हैं। ये तो अपन को समझते भी नहीं हैं पतित कुछ। ये तो गरीब समझते हैं। कोई भी मनुष्य अपन को पतित नहीं समझते हैं, गरीब समझ सकते हैं। तो इनको भी विचार तो चलते हैं ना! ये जो बाबा कहते हैं, विचार तो चलते हैं ना कि हम गरीब निवाज़ हैं, किसको दूँ, क्या दूँ? अभी पैसे से या वो, वो तो सब बहुत हैं यहाँ देने वाले। देखो, कहाँ भी जाओ, मंदिर–टिकाने जाओ, भले ये गवर्मेण्ट ये ये फकीरों के पिछाड़ी लगती है, सो भी लगती है क्यों? क्योंकि देखती है ना बड़े–2 आदमी हो गए हैं, उनके आगे ये गंदे–2 आदमी आते हैं, बीमारी फैलाय देंगे, ये करेंगे, ये करेंगे, तभी। नहीं तो गरीबों को दान देंगे तो वरी कहाँ से ले आएँगे? ये समझते हैं कि बरोबर जो गरीबों के लिए ये सब ये ये बनते हैं आजकल के, तो वहाँ फण्ड्स निकाल करके या गवर्मेण्ट ही दे देती है या फण्ड्स निकालते हैं। जो बड़े फिलैंथ्रोपिस्ट हैं वो वहाँ भी भेज देते हैं। अनाथ–आश्रम जिसको कहा जाता है। वो जानते हैं कि इसमें अनाथ रहते हैं, जिनके/जिनको नाथ नहीं है। अनाथ किसको कहेंगे, सनाथ किसको कहेंगे? अनाथ माने इनको, इनका नाथ नहीं है, ये गरीब हैं। तो बरोबर अर्थ भी यही निकलते हैं ना! तुम्हारा भी नाथ नहीं था, बाप नहीं था। तो बरोबर गरीब थे ना, यहाँ ही ज्ञान की बात में हाँ; क्योंकि अविनाशी धन की बात है। तो रूप–बसन्त तो नहीं थे ना! तो बस जो रूप–बसन्त नहीं हैं, वो गरीब हैं, उसको ही अनाथ कहेंगे और जो रूप–बसन्त हैं, उनको ही सनाथ कहेंगे। सनाथ कहा ही जाते हैं साहुकार को; अनाथ कहा जाते हैं गरीबों को। तो यहाँ तो तुम जानते हो कि हम बहुत, अभी तुम्हारी दिल भी ऐसे होगी कि ये गरीब हैं, इनको कुछ दे देवें; परन्तु तुम फिर भी कहेंगे– हम तो गरीब निवाज़ हैं। हम तो इनको ऐसा ही चीज़ देऊँ, ऐसी वस्तु देऊँ, जो ये सदा ही साहूकार रहें। ये तो कॉमन बात है, ये तो बहुत हैं मनुष्य, देते रहते हैं, उसमें हम क्यों इण्टरफियर करें? नहीं, हम तो इनको सनाथ करूँ, तो बिल्कुल ही विश्व का मालिक बना देऊँ। उसको सनाथ कहेंगे ना बच्ची! वो सनाथ और अनाथ– ये है खेल। है ना! क्योंकि ये तो याद रखो, यहाँ भले कितना भी कोई पदमपति है, तो भी एक जन्म के लिए, अल्पकाल क्षणभंगुर के लिए और वहाँ के लिए कोई एक जन्म के लिए थोड़े ही है? नहीं, वो सदैव सनाथ हैं। तो इनको कहेंगे– सदैव अनाथ हैं। बस, एक जन्म में सा पैसे वाला बना, सो भी अल्पकाल क्षणभंगुर और फिर से जैसे कर्म तैसा वो। तो वहाँ ऐसे तो नहीं, कर्म तो नहीं कूटते हैं ना! वहाँ तो बरोबर हम समझते हैं कि बरोबर हम कभी भी वहाँ अनाथ नहीं बनते हैं। जो भी यहाँ अनाथ हैं, बिल्कुल अनाथ, उसको गरीब कहा जाता है ना! तो उनके लिए देखो ये है कि कैसा भी हो, लूला हो, लंगड़ा हो, गूँगा हो, बोड़ा हो, कैसे भी हो, अनाथ हो, गरीब हो। परन्तु वो मनुष्य तो गरीब अपन को नहीं समझेंगे ना! तो उनको तो नशा चढ़ा हुआ रहता है ना कि हम स्वर्ग में हैं अर्थात् हम सनाथ हैं; परन्तु हैं तो नहीं ना! तुम बच्चे जानते हो कि इस दुनियाँ में इस समय में कोई भी सनाथ नहीं हैं; सभी अनाथ ही अनाथ हैं। सो भी क्यों फिर समझते हैं? अरे, ये क्या पैसा–वैसा है थोड़े ही उनके पास। ये पैसा तो सभी खतम खाते में उनका, मट्टी में/धूल में मिल जाएँगे, जिनका नशा रहता है; क्योंकि नशा ही उनको ये रहता है कि हमारे पास इतना है जो हमारे पुत्र, पौत्रे, परपौत्रे, तो इकट्ठा ही इसलिए करते हैं कि पौत्रे, परपौत्रे, तरपौत्रे– ये सब खाएँगे। वरी उनको साहुकार समझते हैं और तुम इस समय में जिसके पास बहुत पैसा है और वो समझते हैं बिचारे ज़रूर कि हमारा परम्परा हमारा ये चलता रहेगा। वो तो चलने वाला है नहीं; क्योंकि विनाश हो जाने वाला है, सब खत्म। अब विचार करो ये पुरानी दुनियाँ का; इसलिए तुम, तुम इससे/दुनियाँ से वैराग करते हो ना! क्यों? कि पुरानी दुनियाँ है और वो नई दुनियाँ है। नई दुनियाँ को स्वर्ग कहा जाता है; पुरानी

नर्क कहा जाता है। तो ये तो सभी खत्म हो जाएँगे ना! तो तुम जानते हो कि ये पुरानी दुनियाँ, ये खत्म हो जाएगी। बाबा हमको फिर नई दुनियाँ के लिए; जैसे ये साहुकार थे। ये कैसे बने? लड़ाई की? इन्हेरिटेन्स मिला इनको कोई साहुकार से? ..... या ये जैसे दूसरे राजगद्दी पाते हैं, जो साहुकार राजे होते हैं, उनकी राजगद्दी पाते हैं, क्या इसने ऐसी राजगद्दी पाई? जैसे कर्म किया तैसे ही इनको ये धन मिला? नहीं! बाबा का तुमको कर्म सिखलाना अरे बिल्कुल ही न्यारा है। तभी गाया जाता है ना– इनकी कर्म की गति न्यारी। कर्म, अकर्म और विकर्म है। देखो, अक्षर क्लीयर हैं ना! तो ये ठीक लिखे हैं ना अक्षर! तो कहते हैं ना– आटे में लून है। कोई–2 श्लोक या उनका ऐसा है, जिनसे अर्थ निकल सकते हैं, सब झूठ नहीं होती है। जैसे वो लोग कहते हैं– भई, प्रलय होती है। देखो, सब प्रलय होती है? तो कहेंगे ना– भई, आटे में लून। क्योंकि देखो तो सही– और कहाँ 500 आदमी कि इस समय में, कहाँ बाकी 9 लख। तो क्या परसेण्टेज हुआ? क्वाटर परसेण्ट भी नहीं हुआ। तो इसको फिर कहा जाता है– आटे में लून अर्थात् दुनियाँ...विनाश नहीं होती है, कोई ज़रूर रहते हैं। उसको ही कहा जाता है– आटे में लून। बहुत थोड़े रहते हैं। पीछे तो वृद्धि तो बहुत पाते हैं ना बच्चे! तो ये कैसे होते हैं ये पुराने? कि जाते हैं, यही रहते हैं संगम के समय। नहीं, संगम के समय दोनों रहते हैं– वो भी रहते हैं, वो भी रहते हैं। वो कहा जाता है ना– ये भई ये मर गया, ये शरीर छोड़ दिया, जाकर कहाँ कि रहा। भई क्यों गया? कि ये रिसीव करने के लिए गया। समझा ना! एक/दो को रिसीव करना है ना! तो रिसीव करने गया; क्योंकि वो भी ज्ञानी, यहाँ के भी जो आत्मा, वो भी ज्ञानी। तो रिसीव कौन करेगा? जो ज्ञानी आत्मा होगी वो ही दूसरे ज्ञानी आत्मा को रिसीव करेगी। कोई पतित आत्मा होगी तो कोई कोई थोड़े ही उनको करेगी, नहीं। बाबा समझाया ना– जो भी यहाँ के बच्चे हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, जो बिल्कुल ही अच्छे, हम कहते हैं ना कभी–2, जैसे वो मुगली गई, तो अच्छी थी। तो उसने जन्म कहाँ लिया होगा? बिल्कुल अच्छे घर में। है ना! नम्बरवार जैसे–2 जो जाते हैं ऐसे नम्बरवार वहाँ जा करके जन्म लेते हैं और सुख में; क्योंकि सुख तो उनको देखना ही है। फिर थोड़ा दुःख भी होगा ज़रूर; क्योंकि सब तो कर्मातीत अवस्था तो हुई नहीं। तो इसलिए जन्म जो लेते हैं वो बच्ची बड़े घर में जन्म लेते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि स्वर्ग में जाकर जन्म लिया, नहीं, बड़े सुखी घर में। यहाँ कोई, तो ऐसे मत समझो तो यहाँ कोई सुखी घर नहीं है। नहीं, परिवार ऐसे–2 हैं, बात मत पूछो बच्चे। वो तो यहाँ के बच्चों से हज़ार बार; क्योंकि बाबा का अनुभव कहते हैं, देखा हुआ है। अरे शान्ति, एकदम मेल आपस में, बहुत कुटुम्बी हैं जिनका बहुत मेल और–2 छः–2, पाँच–2 बहू। समझा ना! मैंने खुद आँखों से जाकर देखे हैं। वो तो बहुत बड़े आदमियों के घर जाते थे, गरीबों के घर तो जाते ही नहीं थे, गरीबों के घर भी शायद होवे ऐसा। कि बड़ा मकान, बहुत बड़ा मकान और एक–एक थम्बला और बाहर में ऐसे आँगन ओपिन थम्बले के बाजू में और एक–एक देखो, तो बस। छः ही एक थम्बले में बैठे हुए, गीता पढ़ रही है और अपने अपने भक्ति में ही बैठे रहते हैं एकदम। बाबा पूछा– सब इकट्ठे रहते हो? हाँ, इकट्ठे रहते हैं। तो कोई झगड़ा–वगड़ा नहीं होता है? बोला– हमारे पास स्वर्ग है। हमारे पास यहाँ स्वर्ग है। हम कभी भी आपस में लड़ते–झगड़ते हैं ही नहीं। हम सब इकट्ठे रहते हैं, कभी झगड़ा होता ही नहीं। शांत ऐसी फर्स्ट क्लास। तो बाप कहेंगे ना बच्ची, जिसके घर में जाओ और देखो कि वहाँ सभी बच्चे शांत हैं और बहुत आराम है। तो यहाँ तो स्वर्ग लगा पड़ा है। स्वर्ग लगा पड़ा है, तो स्वर्ग कोई और चीज़ थी ना! वो पास्ट हो गई है। तो कहते हैं, यहाँ तो जैसे स्वर्ग लगा पड़ा है। वहाँ राजधानी स्थापन होती है, इतनी राजधानी स्थापन होती, थोड़ी यहाँ आती है, बाकी शांत–शांतिधाम में रहती है, जो पीछे आने वाली है। तो ये सभी ज्ञान

अभी तुमको बच्चों को मिलते हैं कि कैसे ये स्वर्ग की स्थापना होती है, कैसे वो जो भी नहीं आते हैं, ब्राह्मण नहीं बनते हैं, वो तो खत्म ही हो जाएगा। बाकी ये ब्राह्मण जो बनते हैं, कोई थोड़े थोड़े ही बनेंगे। नहीं, जो भी दैवी घराने में आने वाले हैं, वो सभी ब्राह्मण घराने में आने वाले ही हैं; परन्तु अवस्थाएँ जैसे बाबा बताया, है ना, कोई की बिल्कुल अच्छी फर्स्ट क्लास। चला रहेगा शांत, बिल्कुल मीठा, एकदम मीठा, सबको प्यार करने वाला। कोई को भी छिदेगा नहीं। समझा ना! कि छिद देने से दूसरों को दुःख होता है ना! तो वो जिसको दुःख देने वाला, वो तो कभी यहाँ बैठ करके बोले। दीदी पूछती ना– कोई ने किसको दुख दिया है? कभी हाथ नहीं उठाएँगे और रोज़ देते हैं दुख, कोई–न–कोई को ज़रूर देंगे। ये बाबा अनुभव की बात (करे), कोई–न–कोई को, कोई–न–कोई, कोई–न–कोई को दुःख ज़रूर देंगे– मन्सा, वाचा। अच्छा, मन्सा का भी छोड़ जबकि वाचा में आवें। पर वाचा से दुःख ज़रूर देगा। ऐसे–2 करेगा ना, दुःख जरूर देंगे। कहते हैं– पुण्यात्मा, पापआत्मा। फिर क्या कोई शरीर का नाम लेते हैं क्या? नहीं! तो है वास्तव में बात ये कि बरोबर पुण्य आत्मा, पाप आत्मा। तो ये बच्चों को मालूम है कि सभी पाप आत्मा कोई एक जैसे नहीं होते हैं कभी भी, सभी पुण्य आत्मा कोई एक जैसे नहीं होते हैं। देखते हो, ब्राह्मण बनेंगे सभी एक जैसे? नहीं! सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार और वो भी वो समझते हैं फिर यहाँ; क्योंकि पढ़ाई में क्या कोई नहीं समझते होंगे– मेरा केरैक्टर कैसा है? अच्छा, मेरी अवस्था कैसी है? क्या कोई स्टूडेण्ट नहीं समझ सकता होगा? सब समझते हैं, बिल्कुल अच्छी तरह से समझते हैं। तो बाप बोलते हैं– ये समझते सब–कुछ हैं कि हम कैसे चलते हैं, हमारी अवस्था कैसी है, हम कैसे मीठे बनते हैं, हम कोई भी कुछ कहे तो, हम उनको कभी भी कोई उल्टा–सुल्टा जवाब नहीं देते हैं। है ना! सबको प्यार करते हैं बच्चे। बच्चे बहुत कहते हैं– बाबा, गुस्सा लगता है, बच्चों को चमाट मारते हैं। तो बाबा कहते हैं, जितना हो सके इतना प्यार; फिर भी बच्चे हैं छोटे, उनकी भलाई के लिए थोड़ा कान का पकड़ते हो। तो इसलिए दृष्टान्त है ना बच्ची! कृष्ण को तो कभी कोई कुछ कह भी नहीं सके, बिल्कुल नहीं। क्यों, ओखली से क्यों बाँधते थे? तो बात तो यहाँ की है ना! तो बाबा कहते हैं, कोई भी छोटा होवे एकदम, तो उनको चलो खटिया के पइयाँ से बाँध दिओ या कोई कोठी में बन्द कर देते हैं...या कोई झाड़ से बन्द कर दिओ, रस्सी से। बाकी थप्पड़ नहीं मारो; क्योंकि जो कुछ भी तुम करेंगे, वो सीख जाते हैं। अभी ऐसा तो नहीं है कि बड़ा होगा तो माँ–बाप को बैठ करके बाँधेगा कोई चीज़ से। नहीं, वो सीखेगा ही नहीं ना! नहीं, बड़ा होता जाएगा, वो बड़ों को थोड़े ही बैठ करके; ये तो छोटों के लिए शिक्षा है। तो पूछते हैं और वो करता है, हर्जा नहीं है। कान से पकड़ सकते हो, बिल्कुल तंग करे तो। तो ऐसे बच्चे होते हैं, वो नाक में दम कर देते हैं एकदम, चोरी–चकारी वगैरह–3। तो चोरी–चकारी करते हैं, तो वो निर्मोही भी बनना चाहिए ना! ...शिक्षाएँ भी सभी मिलती हैं और ये भी समझते हैं कि हमको ऐसा ज़रूर बनना है; क्योंकि तुम्हारे लिए तो बच्ची है ना, खड़े हैं ना! उसमें कोई स्कूल वगैरह में कोई खड़े नहीं। ये तो एम–ऑब्जेक्ट तुमको यही है एकदम, हाईएस्ट एम–ऑब्जेक्ट; क्योंकि पढ़ाने वाला है हाईएस्ट तो एम–ऑब्जेक्ट हाईएस्ट। तो हाईएस्ट में तो गुण सब लोग गाते हैं ना! कृष्ण के गुण ऐसा कौन होगा जो नहीं गाते होंगे? सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, सब मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमो देवी–देवता धर्म– ये सभी उनकी है। अच्छा! वो उनकी है ना महिमा, गाते हैं ना बरोबर! अभी बच्चों को मालूम पड़ा, तो जो उनकी महिमा गाने वाले हैं, जो वो थे, वो खुद श्री कृष्ण अभी तुम बन रहे हो। देखो, तुमको बाबा कैसे, तुम यहाँ क्यों आए हो? तुम यहाँ आए ही हो ये बनने। एम–ऑब्जेक्ट सिर्फ एब्सल्यूटली ये; क्योंकि कथा ही है तुम्हारी सत्यनारायण से नारायण बनने की, अमर कथा की, तो

अमरपुरी में जाने की, तीसरा नेत्र, त्रिकालदर्शी बनने की। सो तुमको तीनों ही मिल रही हैं। ऐसे तो कोई सुनाएगा भी नहीं। कोई संन्यासी–वन्यासी तो जानते भी नहीं हैं इन बातों को। कोई भी नहीं जानते हैं। क्यों? कोई भी मनुष्यमात्र को ऐसे नहीं कहेंगे– ज्ञान का सागर वा पतित–पावन। सबको थोड़े ही कहेंगे 'पतित'। यहाँ किसको कह सकेंगे 'पतित–पावन'! जबकि सृष्टि सारी पतित है, तो हम किसको कहें पतित–पावन? ये पतित सृष्टि है ना बच्चे! तो पतित सृष्टि के या भ्रष्टाचारी सृष्टि को हम किसको कहें...श्रेष्ठाचारी यहाँ; क्योंकि 'श्रेष्ठाचारी' अक्षर आने से हमको सतयुग याद पड़ते हैं और ये याद पड़ते हैं। जब पुण्य आत्मा तभी भी ये याद पड़ते हैं। यहाँ कहाँ से आए पुण्य आत्माएँ? तो बाप आ करके सब समझाते हैं बच्चों को– तुम बच्चे यहाँ पतित हैं ना! भले ये संन्यासी पवित्र हैं; परन्तु इनको कोई ये पुरुष ये श्रेष्ठाचारी थोड़े ही कहेंगे, श्रेष्ठाचार से पैदा थोड़े ही होते हैं। ये तो बाप ने समझाया ना, ये तो जन्म–ब–जन्म संन्यास लेंगे, पुनर्जन्म लेंगे। अच्छा, बाबा के लिए कोई कहेंगे– पुनर्जन्म लेंगे, हाँ? कोई तो बतावे बाबा के लिए। कोई नहीं बताय सकेगा। कि बाप ने बताय दिया अव्वल नम्बर वाले का नाम, उससे अव्वल तो दूसरा तो कोई है नहीं। श्रीकृष्ण के पहले अव्वल तो कोई है नहीं, तो किसका नाम बताएँगे? तो बाप तो अव्वल नम्बर में बताय देते हैं कि श्रीकृष्ण और फिर वो ही भूल निकालते हैं कि श्रीकृष्ण 'भगवानुवाच' वो कैसे हो सकेंगे; क्योंकि ये भगवानुवाच, वो तो जन्म–मरण रहित, वो तो एक ही है बरोबर और गाया भी ऐसे ही जाता है– शिव परमात्माय नमः। तो तुम बता तो सकते हो सबके। जबकि तुम ब्रह्मा को देवता कहते हो, विष्णु को देवता, शंकर को देवताय नमः कह करके फिर परमात्माय नमः कहते हो, फिर उस परमात्मा को फिर तुम ऐसे क्यों कहते हो– परमात्मा सर्वव्यापी है? फिर तभी ब्रह्मा में भी सर्वव्यापी है तभी ब्रह्मा देवताय नमः क्यों कहते हो? तो है ना तुम बच्चों के पास, अच्छी तरह से समझ मिलती रहती है बहुत, दिन–प्रतिदिन प्वॉइंट्स मिलते रहते हैं और है एक ही प्वॉइंट। तभी बाबा कहते हैं– कभी भी किसको समझाओ तो पहले बाबा के पास, बाबा ये कहते हैं। समझा ना, भगवानुवाच बाबा एक है ना! ये है ना शिव परमात्माय नमः। ये ब्रह्मा, विष्णु, शंकर देवताएँ हैं ना! तो शिव तो ऊपर हुआ ना! अच्छा, तो शिव को तो परमात्मा कहें ना, सबका बाप। वर्सा भी तो बाप से मिलेगा ना! सर्वव्यापी तो कोई–2 से वर्सा तो नहीं मिल सकते हैं ना! तो बाप से, तो वो बाप को ही देखना पड़े और बाप वर्सा जो देते हैं, स्वर्ग का स्थापन करने वाला स्वर्ग का ही वर्सा देंगे, ये स्वर्ग का देखो नम्बर वन। तो तुम बच्चों को अभी मालूम हुआ कि ये पढ़ाई से। आगे मालूम था कभी किसको भी कि पढ़ाई से, योग से। अभी प्राचीन योग बहुत मशहूर है, भारत का प्राचीन योग। अभी प्राचीन भारत का योग क्यों नहीं मशहूर होगा, जिससे मनुष्य पतित से पावन बने और पावन बन करके ये बने विश्व का मालिक! तो उनका नाम, बस इसका ही तो नाम, बड़े–ते–बड़ा ये हुआ ना– प्राचीन भारत का सहज योग और सहज ज्ञान। तो अभी बच्चे समझते हैं ना– बहुत सहज है बिल्कुल ही। है भी सहज, ज्ञान तो सहज है। बाकी योग है, कहने में सहज बहुत आते हैं और यूँ तो सहज ही कहें; क्योंकि इस एक ही जन्म में जो बच्चों को अपनी प्राप्ति करनी है, इसलिए सहज क्यों नहीं कहेंगे? वो भक्ति मार्ग में जन्म–ब–जन्म भक्तिमार्ग की ठोकरें खाते रहते, मिलता तो कुछ भी नहीं है। तो ये एक जन्म में ही मिल सकते हैं तो इसलिए उनको सहज तो कहेंगे ना! फिर सहज भी कह करके, फिर बोलते हैं– एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। अभी सेकेण्ड का भी तो हिसाब चाहिए ना बच्ची; नहीं तो तुम बच्चों को क्या मालूम! सेकेण्ड में बस बच्चा बाहर आया– मेल है, फिमेल है। समझे ना! ऐसे होता है ना, जब बाप का, ये वारिस पैदा हुआ। होते हैं ना ठीक! अरे! अभी थोड़ा भी तुम ठहरो, तो ये वो ऐसे बनाएँगे औजार जो अंदर में बच्चा है या बच्ची है, वो भी बताय देंगे। समझे

ना! बनाएँगे; परन्तु न बनाय सकें; क्योंकि अभी तो साइन्स में लगे हैं दूसरे धन्धे में, इस धन्धे में नहीं लगे हैं; नहीं तो धन्धा तो ये होना चाहिए– बच्चा है या बच्ची है, हाँ? ऐसा कोई इम्तहान पास करें– तो हम बताय सकते हैं। तो साहुकार क्या करें– भई, हमको बताओ। मैं तुमको 50,000 रुपया चार्ज करूँगा, जो हम बताय देऊँगा और एक्युरेट। समझा ना! कभी भी भूल नहीं होगी; क्यों(कि) औज़ारों से देख लेते हैं सब–कुछ। देखो, आजकल क्या नहीं देख सकते हैं। कितना वण्डर है इस सर्जनरी में भी! तो जैसे सब बातों में वण्डर ही वण्डर है। ये बत्तियाँ, ये प्लेन, ये साइन्स का है ना बच्चे! तो ये साइलेन्स का वण्डर वरी फिर देखो कैसा है! देखने में कुछ भी नहीं आता है। वो तो देखने में आता है ना सभी एरोप्लेन गया....। यहाँ कुछ कोई गया कोई कहाँ, कुछ भी नहीं। देखो, शान्त करके तुम यहाँ बैठे हो। उठते हो, जाते हो, नौकरी करते हो, धन्धा करते हो, सब–कुछ करते हो। तो कम कार डे– बाबा कहते हैं ना! कर्मेन्द्रियों तलक जो कुछ कर्म करते रहते हो, कम कार डे और आत्मा की दिल यार डे, अपने आशिक के लिए। अभी ये कोई नई बात थोड़े ही है। आशिक–माशूक तो गाए गए हैं ना! तो बहुत तो नहीं गाए हुए ना! मैं तो समझता हूँ 10,15,20 होगा जो मालूम होगा, 50 होगा। तो देखो, ये भी कितने होते हैं पास विद् में ऑनर? देखो, 8 कह देते हैं, तो बिल्कुल ही पास विद् ऑनर होते हैं। तो उसमें भी इतने ही थोड़े होंगे ना! वो वरी फिर ऐसे होते हैं; क्योंकि विकार तो हैं नहीं वहाँ। उनकी निन्दा नहीं होती है। नहीं–2, वो बस शिकल के ऊपर। आशिक–माशूक होते हैं ना, वो कोई ऐसे नहीं है कि सुहेनी या वो होते हैं, नहीं, बाकी दिल लग जाती है। समझा ना! पीछे एक/दो को देखने बिगर देख रह नहीं सकते हैं। तो उन लोग को तो योग होते हैं, बैठेंगे ना, रोटी पर बैठेंगे तभी भी याद आ गया, सामने आकर खड़ा रहेगा। तो उनको देखते भी रहेंगे, रोटी भी खाते रहेंगे। समझा! हो सकते हैं कि तुम्हारा भी ऐसी अवस्था पिछाड़ी में; पर ऐसे ही जैसे थोड़े गाए जाते हैं, बहुत थोड़े गाए। अरे, हो सकते हैं सामने तुमको, वो जो छोटा साक्षात्कार तो होते हैं ना बच्चे! जबकि आत्मा का साक्षात्कार होते हैं तो परमात्मा का भी होता है। आत्मा का तो होता है, वो तो बाबा ने समझाया था कि वो जो रामकृष्ण परमहंस, उनका जो वो था चेला– विवेकानन्द, वो बैठा हुआ था। उसके उसमें लिखा हुआ है, वाल्यूम्स उसमें। बाबा का पढ़े हुए हैं सब। तो वो भी है और बाबा को भी अनुभव है, तो आत्माएँ बहुत देखने में आती हैं और एक सेकेण्ड जो लगता है। ऐसे ऐसे ही, भले आँखें भी खुली हुए, तो भी एक सेकेण्ड में देख लेते हैं और गुम हो जाती है और कुछ भी नहीं। वो तो हम जानते हैं कि आत्मा वो है। अभी देखा तो क्या हुआ? ये तो सिवाय पढ़ाई के, योग के, तो कोई दर्जा तो मिल नहीं सकते हैं। देखने से कोई फायदा नहीं होते हैं बच्चे। देखते, कि देखो ये भी तो देखते हो ना अभी! अभी तो तुमको प्रैक्टिकल में बनना है ना ऐसे और ये भी चित्र जो हैं ना, ये बच्चे भूल करते हैं एक; क्योंकि चित्र जब बनाते हैं ल.ना. का, तो भई एक ही चलाना चाहिए ना, कभी भी फर्क नहीं बनना चाहिए ना! अगर कृष्ण का भी बनाते हैं, तो एक ही कृष्ण का चित्र चलाना चाहिए, फीचर्स एक ही चलाना चाहिए, कभी बदली नहीं करना होगा। नहीं तो वो बोलेगा– इनके कृष्ण भी तो बहुत ही देखने में आते हैं। भले बहुत हैं, ऐसे नहीं कि फीचर्स बहुत नहीं हैं, हैं; परन्तु नहीं, हम जो बैठ करके ये चित्र पहले, वो तो पहले का ही बनाते हैं ना! तो चित्र जो बनाना होते हैं ना, तो ये सब फीचर्स एक जैसा होना चाहिए, सबकी शिकल एक जैसी बनाना चाहिए। नहीं तो कोई वक्त में डोरापा देंगे ज़रूर– ये क्या? तुम्हारा वहाँ जब बनते हैं कृष्ण, सो भी क्या भिन्न–2 रूप थोड़े ही होते हैं, ज़रूर एक तुम्हारा। तुम बनाते हो यहाँ, कैसे बनाते हो? या टेढ़ा बनाते हो या मुरली देते हो या क्या करते हो या शिकल गौरी देती हो या पतली देते हो, ये क्या करते हो? तो ये भी ज्ञान की बातें हैं ना, समझ की बातें हैं

ना बच्चे! तो फीचर्स तो पहले–2 नम्बर का जो हम रखते हैं। भई, बाबा भी पहला नम्बर बनेगा।...जो बाबा का, पहला नम्बर का जो तुम फीचर्स बनाते हो, सभी एक तो बनाओ ना! तुम फर्क–2 क्यों बनाते हो? देखो, बाबा क्यों समझाते हैं कि वो सुनते तो रहते हैं ना कि वो फीचर्स, भई एक ही दफा फोटो मिला, बस उसी के ऊपर, ये विष्णु का भी बनना है, नारायण का भी बनना है, बड़ा होते हैं, फीचर्स वो ही चलाना चाहिए; परन्तु यहाँ तो भिन्न–2 बनाय देते हैं। तो इसलिए आज इनको वॉर्निंग देते हैं। सुनते तो सभी हैं ना बच्चे! अच्छा, अगर न सुनेंगे टेप, न सुनेंगे वाणी और ये अक्षर न सुनेंगे तो चलते रहेंगे, फिर भी ऐसे ही उल्टा–सुल्टा फीचर्स बनाते रहेंगे। इसलिए बाप कहते हैं कि बाप जो बैठ करके पढ़ाते हैं, वो सुनना चाहिए ज़रूर रोज़। ये जो टेप की है, वो भी तो सुननी चाहिए। टेप बहुतों को सुनाना चाहिए। समझे ना! टेप से भी सर्विस करा तो सकते हैं ना, ऐसे नहीं कोई टेप खराब हो जाते हैं, नहीं। कार में ले जावें टेप, बहुतों की सेवा करके चले आवें। एक अपने ऊपर रखें जो खराब भी नहीं होवे, एक ऐसा होवे जिसको दूसरी सर्विस–बर्विस, भले सर्विस भी हो, तो जा करके कभी सुबह, कभी शाम। टेप में सुनने से टाइम तो वही लगता है जितना बाबा यहाँ लगाते हैं पौना घण्टा। तो कोशिश करेंगे, पुरुषार्थ कोई करेंगे। ऐसे तो बहुत हैं ना जो बच्चे यही सर्विस करते हैं। बच्चे पूछते हैं– हम क्या सर्विस करे? बाबा बोलता है– ये सर्विस कमती है क्या? रोज़ टेप सम्भाल से ले करके और कोई कार में.... या किसमें भी, खराब नहीं होते हैं। जाओ, जो भी सुनने चाहते हैं, बहुत आशिक हैं और जो धारणा करते हैं, जो सर्विस भी ऐसे करते हैं, उनको जा करके सुनाकर भी आओ, जो न कोई आ सकते हैं। बाहर में भी तुम जाते हो आजकल, तो बाबा कहते हैं– प्रदर्शनी ले जाते हो? हाँ, ये भी ले जाना चाहिए साथ में, तो बहुत अच्छी तरह से एक्युरेट सुनेंगे। भले बाबा कहते हैं कि सन्मुख और इस टेप में और वाणी में, तीनों में बहुत फर्क है; क्योंकि यहाँ तो एक्सप्रेशन्स भी देखते हो और वहाँ एक्सप्रेशन न देखें, जब तलक तुम्हारा वो टेलीविजन निकले। पीछे तो देख सकते हो; परन्तु वो तो बहुत ही फिर महँगा हो जाते हैं, बहुत महँगा हो जाते हैं। उनको थोड़े ही कहाँ उठाय करके ले जाएँगे, वो तो बड़ी कीमती चीज़ भी होती है; परन्तु हो सकते हैं, ऐसे नहीं कि नहीं कुछ हो सकते हैं, नहीं, हो सकते हैं। जैसे तुम बैठ करके सुनते हो तैसे बाबा यहाँ गद्दी पे बैठा होगा, देखेगा– बाबा बैठ करके सुनाते हैं। ये भी वण्डर है ना बच्ची! देखो, साइन्स का कितना मज़ा है! कितनी हमको साइन्स मदद देती है। साइन्स जितनी तुमको मदद देती है, और कोई भी तुमको मदद नहीं देते हैं। साइन्स एक तो ये सभी कुछ वाणी भी सुनाती है, ये भी करती है, ये भी की है और ये साइन्स तुमको विनाश भी मदद करेगी, विनाश में भी; क्योंकि तुम्हारा साइलेन्स का बल है, वो साइन्स है। साइन्स द्वारा विनाश होते हैं, साइलेन्स द्वारा स्थापना होती है। तो ये सब समझाने की बातें हैं ना बच्ची औरों को! तो वो खुश भी हो जाते हैं बहुत और सुनते तो हो ना बच्ची– कोई महाराजा आया, कोई फलाना। अच्छा, आया और गया, तो तुम क्या समझते हो वो भूल जाते हैं? बिल्कुल नहीं! वो आगे चलकर जब देखेंगे ना कि बरोबर विनाश होते हैं ना, ये दौड़े, समझे ना और ये दौड़े और ये बहुत पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। जैसे बाबा ने कहा ना– स्कूल के जो बच्चे होते हैं और फाइनल पास विद् ऑनर होते हैं, वो कोई कम थोड़े ही करते हैं, नहीं, स्पेशल टीचर रखते हैं, बगीचे में जाते हैं। बगीचे में सुबह को जाओ तो वाचवानी करते हैं, अरे बस मुँह में किताब ही है उनके। तो जितना जो पुरुषार्थ करता है वो इतना ऊँचा पास नम्बर में भी जाते हैं। ये भी ऐसे ही होगा, तुम देख लेंगे, जो पीछे आएँगे, वो बोलेंगे– अरे, हम पीछे आए हैं! ये जो इतने पुराने हैं, ये हमारे से आगे। उनको बिचारों को थोड़े ही मालूम है कि हम पुराने लास्ट खाते में जाते हैं, नए वो ऊँच खाते में जाते हैं। वो तो बिचारे को मालूम

नहीं होते ना जबकि आ करके सुनें–करें। यहाँ तो बाप सुनाते हैं ना बरोबर! समझा ना! कि पीछे वाले, समझा ना, हाँ वो लग जाएँगे, लगे–2 के माफिक एकदम कि हम जो टाइम वेस्ट किया है, यहाँ हम सेफ करें। तो कर तो सकते हैं ना! हाँ बच्ची, लग जाएगी जब लगन तो वो बैठ जाएँगे, बस खाना खाएँगे, इसमें (तो) तकलीफ थोड़े ही है, खाना खाएँगे तो भी बाबा के याद में, उठेंगे बाबा के याद में। प्रण करके बैठेंगे इतना कड़ा एकदम। तो इतना कड़ा प्रण करके बैठेंगे–करेंगे, तो फिर बाबा की मदद भी मिलेगी उनको। हाँ, ये सब–कुछ होने का है। पुरुषार्थ पिछाड़ी में ज़रूर होते हैं बच्ची और मज़ा होते हैं बहुत पिछाड़ी में हाँ; क्योंकि जैसे शुरुआत में मज़ा था साक्षात्कार का तैसे तुमको पिछाड़ी में है। आदमी वो ही होंगे; क्योंकि वहाँ भी ऐसे ही, हम मलूक बनते थे, हमको कोई किसकी परवाह थोड़े ही रहती थी। कत्लेआम होते थे, हम क्या कर सकते? कोई भी फिकर की बात नहीं थी। पिछाड़ी में तो ऐसे ही होंगे। समझा ना! क्योंकि एक बार तो देख लिया ना पार्टीशन में क्या होते हैं। तो पीछे भी तो ये लड़ाई तो देखी ना, कैसे मारते हैं एक/दो को, बात मत पूछो। समझा ना! कोई उन लोगों को क्यास–व्यास नहीं पड़ता है किसके ऊपर। अरे बात मत पूछो! बस, वो माइयाँ और वो छोकरियाँ और देखा और समझा– काल आया हे भगवन, बस। हे भगवन, और गला चट या टांगें चट या फलाना चट, बहुत–2 खराब हुआ था। तो ये तो कोई प्रलय नहीं थी, ये ये विनाश तो नहीं था ना! ये ये तुमको साक्षात्कार कराने के लिए– तो कैसे विनाश होते हैं। तो ये तो तुम बच्चे जानते हो कि बिल्कुल अच्छी तरह से कि ये विनाश होने का है, हमको बड़ा महावीर बनना है। ज़रा भी कहाँ हिचकना नहीं है। समझा ना! ये देख करके भी हिचना–करना नहीं है। नहीं तो तुम बच्चों को मालूम है, कोई को ऑपरेशन सिर्फ करने वाला कोई देखे तो वो हार्टफेल होकर गिर जाते हैं। ये–3 खुद भी गिरा हुआ है।...ये सब बाबा अनुभव की सभी बातें सुनाते हैं कि किसका ऑपरेशन होता था, देखते–2 येऽऽऽ गिर गया एकदम। उठा करके खटिया–2 के ऊपर डाल दिया, 15 मिनट तो बेशक पड़े थे। तो है ना बरोबर, यहाँ खूनी नाहक का खेल है। इसमें इतना मज़बूत हो जाना चाहिए बिल्कुल ही एकदम; जैसे– महावीर। अरे, दृष्टान्त भी तो पूरा दिया हुआ है ना, खेल भी तो वही है– ये रावण का और राम का और और दृष्टान्त भी उन्हीं का दिया हुआ है। तो भाई उनको कितना भी तूफान आवे, कोई भी बात होवे, तो वो अडोल बैठे रहेंगे एकदम। तो ऐसे तो नहीं, कोई पैर आकर उठाएगा। पैर उठाने, तो ऐसी बात वरी पैर उठाकर घिसकर ले जावे। नहीं, ये बाप बैठकर समझाते हैं कि कितना भी तूफान माया का आवे। संकल्प जैसे तुम कहते हो ना– बाबा, स्वप्न आते हैं, ये आते हैं, ये आते हैं, ढेर आ अथाह और दिन–प्रतिदिन वृद्धि को पाते जाएँगे; क्योंकि तुम पहलवान बनते जाएँगे तो माया भी पहलवान बनती जाएगी। ये तो समझते हो ना, पहलवान पहलवान से लड़ेंगे, सेकण्ड सेकण्ड से, थर्ड थर्ड से। तुम ये सुनते हो, अखबारों में भी सुनते हो और ये भी ऐसे ही है, जितना तुम पहलवान बनेंगे, माया भी पहलवान बनेगी। तो पिछाड़ी को देखा ना, एक का ये दृष्टान्त दे दिया कि भई अचल–2–अडोल रहा। है ना, और आग भी लग गई। समझे ना! तो देखो, कितना अच्छा दृष्टान्त बनाया है; परन्तु कोई समझे ना! बाप बैठ करके समझाते हैं अच्छी तरह से कि क्या होता है पिछाड़ी में। तो तुमको भी ऐसे महावीर बनने का है और उनकी यादगार यहाँ खड़ी है। ये यादगार तो एक्युरेट है बिल्कुल ही। तो महावीर का ही तो चित्र दिया है ना! तो महावीर, वो ही तो ब्रह्मा है ना, दूसरी तो कोई चीज़ नहीं। वो ही आदिदेव है। नाम ढेर रखा है। अच्छा, आओ बच्ची! है तभी तो गाया जाता है ना– ज्ञान का सागर है, ज्ञान का सागर है। जन्म–ब–जन्म कहते आते हो– ज्ञान का सागर है। तो एक दिन तो ज़रूर पढ़ाएँगे जो बंद हो जावे मूथ, कहने का भी, स्तुति करने का भी। ...जिसमें गुण

हैं, तुम्हारे में भी अच्छा लगता है वो जो किसको बैठ करके और और सिखलाते हैं। ये तो ठीक है ना! मीठा लगेगा बहुत। बाबा भी यहाँ देखते रहेंगे– ये कौन है जो बहुतों को जा करके ये–3 सुनाती है लात और बहुत अच्छा करके बनाकर ले आती है, साथ में ले आती है। तो जितना साथ में ले आएगी उतना बाबा कहेंगे– अच्छी मेहनत करती है। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि जो ले आती है, वो अच्छी मेहनत करती है, वो नहीं करते हैं। नहीं, जिनको फिर ले आती है, वो फिर उनसे भी अच्छे जाते हैं। हाँ ये ऐसे बहुत, बहुत हैं ऐसे, जो सीखते हैं, वो सिखलाने वाले से तीखे जाते हैं। सिर्फ तुम जानते हो– रमेश–उषा, अरे! अभी तो आए हैं। तो देखो, कितने से तीखा! उनकी पुकार पड़ती है– उनको भेज दिओ, उनको भेज दिओ। होते हैं ना बच्ची! नए–2 को, भई सुदेश है, फलाना है, ये तो नए हैं सब। अभी ये भी तो नया है।...इनको कितने बुलाते हैं, मेल को भी– फलाने को भेज दिओ। क्यों? ये आ करके सर्विस करेंगी। दोनों सजाएँगे, वो भी करेंगे। तो ऑलराउण्ड सर्विस वाला चाहिए। है ना! जैसे बहुत भाषाएँ सीखने वाले का मान होते हैं ना, तैसे ऑलराउण्ड सर्विस करने के बाद जो काम आए, वाढे का तो वाढे के लगाय दिया। तो ऑलराउण्ड, इन बच्चों से पूछो कि ऑलराउण्ड बाबा–मम्मा भी काम करते थे ना! ये लोग इस्तरी करते थे, पहले मम्मा–बाबा जाते थे। भल बर्तन माँजते, बाबा–मम्मा जाते थे। वो जा करके करते थे, क्यों? जैसे कर्म हम करेंगे, हमको देख करके और भी करने लग पड़ेंगे। तो ये करना पड़े ना बच्चे! सिखलाने भी होते हैं। तो इनको भी देखो सिखलाते हैं ना! जैसा कर्म इनकी माँ या इनको सिखलाएँगे। अभी कल इनको देंगे थाली, ये आपे ही ले करके जा करके ये सबको देंगे। पीछे एक दफा नहीं तो दूसरा दफा ट्रायल करेंगे; पर देखने में ऐसे आते हैं, बच्चे–2 भी होते हैं ना, कोई तो फट से सीख जाते हैं।

अच्छा, मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप वा दादा का दिल वा जान, सिक और प्रेम से यादप्यार और गुडमॉर्निंग। बच्चों प्रति रूहानी बाप की नमस्ते।